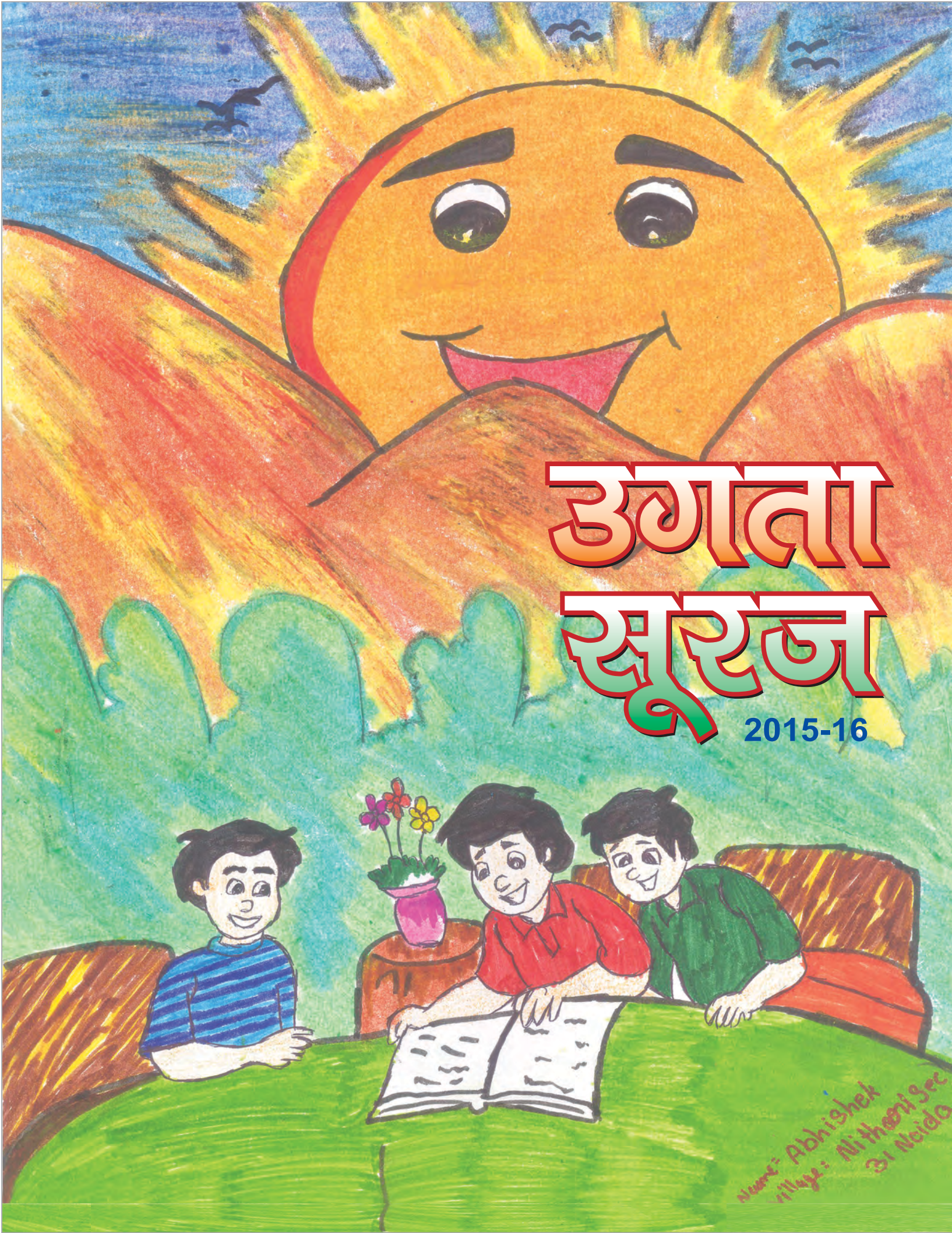

उगता सूरज

2015-16

उगता सूरज गान

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

देखो हमने पढ़ना सीखा
हर मुश्किल से लड़ना सीखा।
आओ तुम भी बच्चों आओ
और हमारे संग में गाओ।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

दिल में ये अरमान जगाओ
घर–घर में शिक्षा अपनाओ।
कोई बच्चा छूट ना जाये
घर–घर में आवाज लगाओ।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

पढ़ो लिखो इंसान बनो तुम
अपने देश की जान बनो तुम
सब बच्चों को ये बतलायें
किरणों से भी आगे बढ़ जायें।

उगता सूरज के हम बच्चे
कितने सच्चे कितने अच्छे।

फिर समय आ गया कि उगता सूरज अपनी किरणें फैलाकर छोटे-छोटे बच्चों द्वारा तैयार किए हुए लेख सबके सामने उजागर करें। पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी उगता सूरज और विद्यारत्न के बच्चों ने खूब जोर-शोर से अपनी जिन्दगी को एक झरोखे में ढ़ालकर हम सबको पढ़ने और समझने का मौका दिया है। इनकी कहानी पढ़कर जिन्दगी की सच्चाई खुद-ब-खुद हमारे सामने आ जाती है। बच्चों के द्वारा की हुई drawings बिल्कुल जीवित सी लगती है जैसे कि बच्चों की भावनाएं और आशाएँ कागज पर सीमित हो गई हों।

जहां एक तरफ विद्यारत्न के बच्चे स्कूल की सीढ़ियां एक-एक करके चढ़ते जा रहे हैं वहां उगता सूरज के बच्चे स्कूल की इमारत को इस आशा से देखते हैं कि कब वे कंधे पर बस्ता लेकर उस इमारत के अन्दर दाखिल होंगे। बच्चों के इन दोनों तरह के सपनों को पूरा करने का सदरग ने जो बीड़ा उठाया है वह बिना बच्चों, उनके माता-पिता और सीानीय शिक्षा विभाग की भागीदारी के बिना नहीं हो सकता है। सदरग को हमेशा सभी का सहयोग मिला है और तभी आज बच्चे खुशी-खुशी स्कूल जाते हैं और बड़े-बड़े सपने देखते हैं। हम इन्हीं सपनों को साकार करने के लिए जुटे हैं। जब आज एक बच्चा निर्भय होकर अपने हक की बात करत है तो हम उसे सदरग की जीत मानते हैं क्योंकि यही बच्चा कल अपने साथियों के साथ मिलकर समाज में बदलाव की बात को उठाएगा। हम कोशिश करते हैं कि अपने बच्चों में leadership के बीच अंकुरित कर सकें।

सदरग की तरफ से मैं कामना करती हूं कि उगता सूरज और विद्यारत्न तरक्की के रास्ते पर तत्पर रहे ताकि हर बच्चा वो पा सके जो कि उसका हक है।

डॉ. माला भण्डारी,
अध्यक्षा, सदरग

महोदया जी,

आपके सेंटर से जो भी बच्चे हमारे स्कूल में आते हैं वे अच्छे गुणों से भरपूर होते हैं।

वे बच्चे पढ़ना चाहते हैं और पढ़ते हैं। कुछ एक बच्चे ही होते हैं जो नहीं पढ़ते। साथ ही उनमें गाने, ड्राइंग करना एक्टिंग करना आदि गुण विद्यमान होते हैं।

मैं समझता हूं कि आप लोग ही बच्चों में कला का विकास करते हैं। आप जैसे लोग इसी प्रकार निम्न वर्ग के बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक हैं जिससे इन बच्चों का भविष्य दिन प्रतिदिन सुधर रहा है।

मैं आपकी संस्था के लिए दिल से दुआ करता हूं कि यह दिन प्रतिदिन आगे बढ़े। मैंने तो पहले भी आप लोगों से प्रेरित होकर आपके दो बच्चों निशा-कृष्णा को बारहवीं तक की मुफ्त शिक्षा का अवसर प्रदान किया है।

आपकी जैसी संस्थाएं ही बच्चों के भविष्य को सुधारने में सहायक होती है इसके लिए मैं सदरग संस्था को धन्यवाद देता हूं।

राजेश कुमार
B.S. मैमोरियल स्कूल

मेरा नाम शाहरूख है मैं 16 साल का हूं। हम दो भाई व एक बहन हैं। मेरे पिता व माता मजदूरी करते हैं। हम बिहार के रहने वाले हैं अब पिछले 12-13 वर्षों से ग्राम हरौला में रह रहे हैं। मेरे पिता पीने-खाने वाले आदमी हैं, मेरी माता हम भाई-बहन का पालन-पोषण कर रही हैं। जब मैं छोटा था तब बच्चों को स्कूल जाते देख मेरा मन भी स्कूल जाने को करता था लेकिन घर की स्थिति खराब होने के कारण यह असंभव था।

हरौला के बारात घर में जब मैंने मैम को अपने जैसे बच्चों को पढ़ाते देखा तो उन्होंने मुझे भी वहां बुला लिया, और पढ़ाने लगी। फिर एक वर्ष बाद उन्होंने सदरग संस्था के विद्यारत्न प्रोग्राम के अंतर्गत मेरा एडमिशन नोयडा पब्लिक स्कूल में करवा दिया। आज मैं 10वीं कक्षा का छात्र हूं। मैं ग्राफिक डिजाइनर बनना चाहता हूं, मुझे उम्मीद ही नहीं पूरा भरोसाा है कि मैं अपना सपना पूरा कर सकूंगा।

मैं हमेशा इस संस्था से जुड़ा रहना चाहता हूं, जिससे मेरा भविष्य उज्ज्वल बने क्योंकि यह संस्था बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक है।

शाहरुख
कक्षा 10
विद्यारत्न हरोला

मैं दिव्या कुमारी, उम्र 14 वर्ष, ग्राम निठारी में अपने माता-पिता, भाई-बहन के साथ रह रही हूं। मेरे पिता पुराने कपड़ों की सिलाई का कार्य करते हैं। उनकी आमदनी अच्छी नहीं है। हम चार भाई बहन हैं। जब मैं छोटी थी तो मैम मुझे उगता सूरज सेंटर पर ले आई। एक साल तक पढ़ने के बाद मेरा प्राइवेट स्कूल में दाखिला करा दिया। मैंने कक्षा 4 तक वहां पढ़ाई की। लेकिन बीच में ही छोड़नी पड़ी, और दुबारा उगता सूरज सेंटर जाने लगी। फिर 2013 में मेरा विद्या रत्न प्रोग्राम के अंतर्गत नौयडा पब्लिक स्कूल में 5वीं कक्षा में एडमिशन करा दिया गयाा, आज मैं 8वीं कक्षा में आ गई हूं। इसके लिए सारा खर्चा सदरग देती है, मैं बड़े स्कूल में पढ़ना चाहती थी। मेरा सपना पूरा हो गया। मुझे डांस करना बहुत अच्छा लगता है। मैं अपनी संस्था के द्वारा कई दूसरे कार्यक्रमों में डांस प्रस्तुत करने जाती हूं। मुझे अपनी संस्था पर बहुत गर्व है, जो मेरे जैसे बच्चों के सपनों को पूरा करने में मदद करते हैं। मैं हमेशा इस संस्था से जुड़ी रहना चाहती हूं और बड़ी होकर डाक्टर बनना चाहती हूं तथा गरीबों का मुफ्त इलाज करना चाहती हूं।

दिव्या
उम्र 14, कक्षा 8वी,
निठारी, विद्यारत्न

मेरा नाम गोविन्द है। मैं 10 साल का हूं। मेरे दो भाई व एक बहन है। मैं अपने बड़े भाई व पिताजी के साथ अगाहपुर में रहता हूं। मेरी माता मेरी बहन भाई के साथ बिहार में रहती हैं। जब मैं 6 वर्ष का था तो पिता मुझे गांव से यहां ले आए लेकिन पैसे के अभाव के कारण वे मुझे स्कूल नहीं भेज सके। तब उगता सूरज सेंटर अगाहपुर में मुझे मैम निशुल्क शिक्षा बताकर ले आई और मुझे पढ़ाने लगी। अगले वर्ष 2011 में मुझे विद्यारत्न प्रोग्राम के तहत नौयडा पब्लिक स्कूल में प्रवेश दिलाया गया। वहां अब मैं 6वीं कक्षा में पढ़ रहा हूं। यहां का मेरा सारा खर्चा सदरग संस्था द्वारा दिया जाता है।

मैं बहुत खुश हूं कि मैं इतने बड़े स्कूल में पढ़ रहा हूं। मेरे माता-पिता और बड़ा भाई मुझे पढ़ने में मदद करते हैं। मैं चाहता हूं कि मैं बड़ा होकर डाक्टर बनूं और अपने जैसे बच्चों व उनके परिवार की मदद करूं।

गोविन्द
ग्राम अगाहपुर, कक्षा 6
नोयडा पब्लिक स्कूल, विद्यारत्न

मेरा नाम इन्द्रजीत है। मैं 16 साल का हूं। मैं निठारी में अपने परिवार के साथ रहता हूं। मेरा एक भाई व एक बहन है जो मुझसे छोटे हैं तथा पढ़ाई करते हैं। मेरे माता-पिता मजदूरी करते हैं।

मैं पिछले 10 वर्षों से निठारी में रहता हूँ। मेरे पिता पहले बीमार रहते थे तो मुझे राशन की दुकान पर काम करना पड़ता था। एक दिन जब वह डॉट रहा था तो उगता सूरज की मैम ने मुझे रोते हुए देखा और पूछा कि क्या तुम स्कूल नहीं जाते, मैंने मना किया और अपनी मजबूरी बताई। तब वे मुझे सेंटर पर बुलाकर पढ़ाने लगी। अब मैं काम के साथ-साथ पढ़ाई भी करने लगा। फिर 2011 में मेरा एडमिशन विद्यारत्न प्रोग्राम के अंतर्गत नौयडा पब्लिक स्कूल में करा दिया गया जहाँ मैं आज 8वीं कक्षा में पढ़ता हूं।

सदरग संस्था व एडोब के द्वारा चलाए जा रहे AYV प्रोग्राम से भी जुड़ा हूं मैंने यहां आकर कैमरा, लैपटॉप ऑपरेट करना सीखा। मेरी फोटोग्राफी की सराहना की जाती है। यहां आकर मैंने अपने ग्रुप के साथ छोटी-छोटी प्रेरणादायक मूवी बनाई है। अभी भी मैं इस कार्यक्रम से जुड़ा हूं। AYV प्रोग्राम से जुड़कर मेरे अन्दर एक ऊर्जा का विकास हुआ। मेरा आत्मविश्वास बढ़ा है, मुझे अब किसी से बात करने में घबराहट नहीं होती।

फोटोग्राफी के द्वारा छोटे-छोटे इवैन्ट में जाकर मैं पैसा भी कमाता हूं जिससे अपने छोटे-छोटे खर्चे मैं स्वयं निर्वाह कर लेता हूं तथा अपने छोटे भाई बहन की मदद भी कर लेता हूं। मैं बड़ा होकर वीडियोग्राफर बनना चाहता हूं। AYV द्वारा सीखे कार्य को अपनी जीविका का साधन बनाना चाहता हूं इसके लिए सदरग संस्था, ADOBE व AIF को धन्यवाद देता हूं।

इन्द्रजीत राय
कक्षा 8वीं,
नोयडा पब्लिक स्कूल
विद्यारत्न

मेरा नाम शीला है। मैं बिहार जिला समस्तीपुर की रहने वाली हूं। मैं 15 साल की हूं। मेरे पिताजी लगभग 25 साल पहले से निठारी सेक्टर 31 झुग्गी में रहने लगे। हम 5 बहन और 1 भाई हैं। मेरे पिताजी ठेली चलाते हैं। मेरे पिताजी की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी जो कि हम लोगों को पढ़ाते। लेकिन संजू मैम ने हम लोगों को निठारी सेंटर पर पढ़ाकर सरकारी स्कूल में नाम लिखा दिया। मैं मन लगाकर पढ़ने लगी। तीसरी कक्षा में मेरा एडमिशन हुआ। मैंने सरकारी स्कूल से 8वीं पास कर ली। मेरे माता-पिता मुझे आगे पढ़ाना नहीं चाहते थे क्योंकि उनके पास पैसे नहीं थे। मैंने निठारी के उगता सूरज सेंटर पर सार्थक प्रोग्राम के अंतर्गत सिलाई सीखी। उसके बाद मैंने लोगों के कपड़े सिलाई किए। सार्थक प्रोग्राम में और महिलाओं को भी सिखाया। ये पैसे जमा करके मैंने 9वीं कक्षा में एडमिशन लिया। आज मैंने 10वीं पास की। मैं अब आगे और पढ़ूंगी और मुझे पढ़ना अच्छा लगता है।

शीला, निठारी

मेरा नाम इजरायल खान है। मैं बिहार के सदुवेली गांव का रहने वाला हूं। मैं 11-12 वर्ष पहले आर्थिक परेशानियों के कारण गांव छोड़कर निठारी गांव में आया। मेरे परिवार में मेरी पत्नी दो बेटी व एक बेटा दानिश है। मैं अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देना चाहता था लेकिन रिक्शा चलाकर इतनी आमदनी नहीं होती थी कि बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा सकता।

हम दोनों पति-पत्नी मेहनत करते लेकिन ज्यादा पैसा न कमा पाते। फिर जब दानिश का एडमिशन नौयडा पब्लिक स्कूल में हुआ तो मेरी खुशी का ठिकाना न था। धीरे-धीरे दानिश ने सदरग संस्था के AYV प्रोग्राम से जुड़कर वीडियोग्राफी का कोर्स कर फोटोग्राफी सीखी और अब छोटे-छोटे इवैन्ट करके यह कुछ पैसे कमा लेता है। जिससे घर की आर्थिक स्थिति में सहायता मिलती है। साथ ही यह कुछ बच्चों को ट्यूशन भी पढ़ाता है। यह सब सदरग संस्था की ही देन है।

अगर आज दानिश इस संस्था से न जुड़ा होता तो यह सब संभव नहीं था। मैं इस संस्था के द्वारा किए गए काम से संतुष्ट हूं। मैं इस संस्था को धन्यवाद देता हूं जिसकी बदौलत हमारे परिवार की स्थिति में सुधार हुआ।

पिता दानिश, निठारी

मेरा नाम रजनी देवी है। मैं निठारी में रहती हूँ मेरी 4 बेटी व 2 बेटे हैं। मेरे पति गांव में रहते हैं, मैं मेहनत मजदूरी करके अपने बच्चों का पालन पोषण करती हूँ। मेरे पास इतने पैसे नहीं है, जो मैं अपने बच्चों को अच्छे स्कूल में पढ़ा सकूं। मैं सदरग संस्था का धन्यवाद देती हूँ जिसकी बदौलत मेरी बेटी नेहा, नौयडा पब्लिक स्कूल की 5वीं कक्षा में पढ़ रही है। मैं इसके भविष्य को संवारने के लिए सदरग संस्था की आभार रहूंगी।

यहां पढ़ाई के साथ-साथ अलग-अलग क्रियाकलापों में भी सहायता मिलती है। जैसे डांस, ड्राइंग आदि। समय समय पर संस्था के द्वारा ट्यूशन की व्यवस्था भी निशुल्क प्रदान कराई जाती है। यह संस्था बच्चों का भविष्य संवारने में सदैव अग्रसर है।

रजनी देवी, माता-नेहा
उम्र 35, निठारी, विद्यारत्न

मेरा नाम संगीता देवी है। मैं बिहार जिले की रहने वाली हूँ। मेरे पति रिक्शा चलाते हैं व मैं घरों में झाड़ू-पोछा करती हूँ। हम मेहनत मजदूरी से बच्चों का पालन-पोषण करते हैं, लेकिन अच्छे (मंहगे) स्कूल में बच्चों को नहीं पढ़ा सकते।

सदरग संस्था ने मेरी बेटी राधा को नौयडा पब्लिक स्कूल में एडमिशन दिलाकर मेरी बेटी का भविष्य उज्ज्वल किया।

यह संस्था समय-समय पर बच्चों के घूमने के उद्देश्य को भी पूरा करती है। इस संस्था के सभी कार्य उल्लेखनीय हैं, मैं इस संस्था की सदा आभारी रहूंगी।

संगीता देवी, माता राधा
विद्यारत्न

मेरा नाम विभा है मैं 8 साल की हूँ मेरे पिताजी का नाम पसिन्दर साहनी है मेरी मम्मी का नाम कौशल्य देवी है। मेरा गांव का नाम पुनास है जो कि बिहार में है। हम यहां होशियारपुर गांव में डेढ़ साल से रह रहे हैं। मेरी मम्मी की तबियत बहुत खराब रहती थी जिसकी वजह से मैं स्कूल नहीं जाती थी। मेरे छोटे 2 भाई और 2 बहन है मुझे अपने घर का सारा काम करना पड़ता है और अपने भाई बहनों को भी संभालना पड़ता है। मुझे स्कूल में पढ़ने का बड़ा मन था। फिर सेन्टर वाली मैम हमारे घर आई और मुझे पढ़ाने के लिए सेन्टर लेकर आई। मैं और मेरी बहन हम दोनों अपने छोटे भाई को लेकर सेन्टर आते हैं। मैम हमें पढ़ाने के साथ खेल भी खिलाती है, ड्राइंग भी कराती है और पेपर से कई तरह की चीजें भी बनाना सिखाती है। अब धीरे-धीरे मुझे सेन्टर आना अच्छा लगने लगा है। अब रोज मैं सेन्टर आती हूँ।

विभा
होशियारपुर

मेरी कहानी मेरी जुबानी

मेरा नाम दिव्या है। मैं कक्षा 8वीं में पढ़ती हूँ। मेरे स्कूल का नाम नौएडा पब्लिक सीनियर सेकेन्ड्री स्कूल है। मैं 13 साल की हूँ। मैं निठारी में रहती हूँ। मुझे Dance करना बहुत पसन्द है। पहली बार मुझे स्टेज Dance करने में बहुत डर लगा पर अब मैं बिल्कुल नहीं डरती। अब तक मैं बहुत सारे style के dance कर चुकी हूँ। जैसे contemperary, salsa, kathak, hiphop etc. पर dance के साथ-साथ मैं अपने स्कूल की Kho-Kho सीनियर player भी हूँ। मुझे sports में बहुत interest है। मुझे हर तरह के game खेलना बहुत पसंद है। Game में select होने के लिए मुझे ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी। Dance करने और Kho-Kho खेलने के साथ-साथ मुझे अपने पापा का सपना भी पूरा करना है। पापा मुझे बचपन से यही कहते थे कि मैं अपनी बेटी को IAS अफसर बनाऊँगा। मैं अपने पापा का सपना पूरा करने के लिए कुछ भी कर सकती हूँ। अगर इसके लिए मुझे Dance और Kho-Kho भी छोड़ना पड़े तब भी एक ना एक दिन मैं अपनी family, अपने उगता सूरज सेंटर की संजू मैम, माला मैम, सन्तोष मैम, अपने स्कूल, अपने friends सभी को IAS बनकर दिखाऊँगी और अभी की तरह उस वक्त भी सभी को मुझ पर बहुत गर्व होगा।

दिव्या, विद्यारत्न

My Self

My name is Tanya
I am 12 years old
I read in Ugta Suraj Centre
It's a NGO which is very helpful for all.
I live in Nithari
My father's name is
My mother's name is
I have two brothers and three sisters.
My hoby is Dancing.
I love my family.

Tanya, 12 years
Nithari

जीवन को मिली नई दिशा

मेरा नाम अजीत है। मैं 13 वर्ष का हूं। हम 3 भाई व 2 बहनें हैं। हम बिहार के रहने वाले हैं। मेरे पापा 4-5 साल से निठारी में रहते है। इस वर्ष मेरा पूरा परिवार निठारी में आकर रहने लगा। मेरे पापा कबाड़ा चुनकर बेचते हैं। मैं भी अपने पिता के साथ कबाड़ा इकट्ठा करता था लेकिन उगता सूरज सेंटर की मैम ने जब मुझे इस काम को करते देखा तो गुस्सा करने लगी कि तुम को तो पढ़ना चाहिए। मैंने उन्हें बताया कि हमारे पास पैसों की कमी है तब वे मेरी मां से मिली व बताया कि हम बारात घर में पढ़ाते हैं और कोई पैसा नहीं लेते बल्कि पढ़ने-लिखने की सामग्री भी देते हैं, अब मैं तथा मेरे भाई बहन भी उगता सूरज सेंटर में आते हैं यहां हम पढ़ने के साथ-साथ खेलते भी हैं, ड्राइंग भी करते हैं मुझे यहां आना बहुत अच्छा लगता है। अब मेरे माता-पिता जब मजदूरी करने चले जाते हैं तो मैं अपने भाई बहन के साथ सेंटर पर आ जाता हूं। अब मैंने कबाड़ा इकट्ठा करना छोड़कर लिफाफे बनाकर बेचना शुरू कर दिया है। जिससे खाली समय का उपयोग भी होता है व पैसा भी मिलता है। लिफाफे बनाना भी मैंने उगता सूरज सेंटर में ही सीखा है। मैं अपनी गुरु को बहुत मानता हूं जिन्होंने मुझे यह राह दिखाई। मैं बड़ा होकर पुलिस अफसर बनना चाहता हूं।

अजीत कुमार
निठारी सेंटर

मेरा नाम रविना है। मैं बारह साल की हूं। मेरे माता-पिता बिहार छोड़कर निठारी में रोजी रोटी कमाने के लिए 4-5 साल पहले आए। मैं चार भाईयों की अकेली बहन हूँ मेरे माता-पिता मजदूरी करते हैं। मैं अपने घर का काम करती थी। एक दिन सर्वे करने आई मैम ने मुझसे पूछा कि तुम स्कूल जाती हो मेरे मना करने पर उन्होंने कहा कि तुम हमारे सेंटर पर आओ हम तुम्हें पढ़ना सिखाएंगे। फिर उन्होंने मेरी मम्मी से भी यही कहा। मैं अगले दिन से उगता सूरज सेंटर आने लगी। अब मुझे पढ़ना आ गया मैंने मन लगाकर पढ़ाई की। अब मेरा नाम निठारी के प्राइवेट स्कूल की 6वीं कक्षा में लिखवाया गया है। मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है। स्कूल में सभी मेरी बढ़ाई करते है तो मुझे बहुत अच्छा लगता है। यह सब उगता सूरज सेंटर के माध्यम से हुआ। मैं बड़ी होकर डांसर बनना चाहती हूं।

रविना, कक्षा 6
डी.एस. मेमोरियल पब्लिक स्कूल

मेरी कहानी खुद की जुबानी

मेरा नाम कमल है। मेरी उम्र 8 वर्ष है। मैं उगता सूरज में पढ़ता हूँ मैं जब यहां पढ़ने आया था तो हमें कुछ भी नहीं आता था अब हमें सब कुछ आता है जो एक प्राइवेट के 2 कक्षा के बच्चों को आता है। उगता सूरज से हमने बहुत कुछ सीखा। वहां पर किसी से भी प्यार से बात करने और अपनी इच्छा को पूछकर पढ़ाते हैं। जो हर एक बच्चा वहां पढ़ने जाना चाहता है। उगता सूरज की टीचर बच्चों से दोस्तों जैसा व्यवहार करती है। और मस्ती-मजाक में पढ़ाती है। जो वहां की सबसे खास बात है। मैं उगता सूरज को धन्यवाद देता हूं और हर एक अपने मित्र, बहन, भाई को शिक्षा के

कमल
उम्र 8 वर्ष, नवादा सेंटर

मेरा नाम अतुल है। मेरे पिताजी का नाम निटु है। और माता सुनिता है। मेरी उम्र 9 वर्ष है। मेरे दो भाई और एक बहन है। मेरे पापा बहुत पीते हैं काम पर भी नहीं जाते हैं। मेरी मां स्वीपर का काम करती है। मैं मेरठ का रहने वाला हूँ हम लोगों के पास इतने पैसे नहीं होते कि मम्मी किसी स्कूल में नाम लिखवाती। मैं बड़ा हूँ अपने भाई-बहनों में। मैं घर पर खाना बनाता हूँ, मैम ने जब हमारे पापा से बात की फिर पापा ने हमारा उगता सूरज सेंटर में एडमिशन कराया हम तीनों भाई बहन पढ़ने आते हैं यहां पढ़ाई अच्छी होती है। और कॉपी भी नहीं खरीदनी पड़ती।

जब हम यहाँ आए तब हमें मात्र 10 तक गिनती आती थी लिखना और अक्षर का पहचान बिल्कुल भी नहीं था। मुझे अब मात्रा सब आती है। बुक पढ़ लेता हूँ मम्मी को न्यूज पेपर भी पढ़ के सुनाता हूँ और मैंने अपनी मम्मी को signature करना भी सिखा दिया। मेरी मम्मी भी पढ़ी लिखी नहीं है। मेरे पापा हमें बहुत मारते थे घर छोड़ के कही जाने के नाम पर। कुछ दिन तक तो हम भाई-बहन छुपकर आए पढ़ने। वे हमें कभी भेजते, कभी मना करते थे। अब पापा मारते नहीं हैं। मैं बड़ा होकर फौजी बनना चाहता हूँ।

अतुल, नवादा सेंटर

मेरा नाम शक्ति है। मैं 10 साल का हूँ। मेरा गांव सियाहकोठी मुटियारी जिला कटास (बिहार) है। मैं 3 साल से होशियारपुर में रह रहा हूँ। मेरे पिताजी का नाम सुरेन्द्र है और वो रिक्शा चलाते हैं। मेरी मम्मी का नाम मीना देवी है और वो कोठी में काम करती है। हमारे घर की परेशानी की वजह से मैं स्कूल पढ़ने नहीं जा पाता था। मेरी बड़ी बहन रूमा और छोटी बहन नेहा भी इसी वजह से पढ़ने नहीं जा पाती थी। नीतू मैम ने हमें उगता सूरज के बारे में बताया और वहां पढ़ने आने के लिए बोला। मेरी बहन भी पढ़ना चाहती थी लेकिन मेरी मम्मी उससे कोठी में काम कराती थी। लेकिन नीतू मैम ने लगातार 15 दिन हमारे घर आकर मेरी मम्मी पापा को समझाया और हम तीनों बहन भाई स्कूल जाने लगे। हमें उगता सूरज सेंटर आना अच्छा लगता है। वहां हमें मैम पढ़ाने के साथ-साथ नई-नई एक्टिविटी भी कराती है। अब उन्होंने हमारा एडमिशन प्राइमरी स्कूल में करा दिया है।

शक्ति, कक्षा 1, होशियारपुर

मेरा नाम स्नेहा है! मेरे गांव का नाम मुटियारी (बिहार) है मैं दो साल से होशियारपुर में रह रही हूं। मेरे पिता का नाम स्व. मनोज है माता का नाम सुमन देवी है। मैं 8 साल की हूं मेरे दो छोटे बहन-भाई हैं। मेरी मम्मी कोठी में काम करती है मैं घर पर अपने बहन भाई को संभालती थी इसलिए मैं स्कूल नहीं जा पाती थी। मेरा बहुत मन था पढ़ने का लेकिन मजबूर थी और स्कूल नहीं जा पाती थी। फिर एक दिन नीतू मैम हमारे घर आई और उन्होंने मेरी मम्मी से बात की लेकिन मेरी मम्मी ने मना कर दिया क्योंकि मेरा छोटा भाई 2 महीने का था तब नीतू मैम ने मेरी मम्मी को सुझाव दिया कि आप 1 बजे घर आ जाती हो उसके बाद लड़की को स्कूल भेज दिया करो इस बात पर मेरी मम्मी तैयार हो गई और मैं पढ़ने के लिए 1 बजे से उगता सूरज सेंटर जाने लगी। अब मैम ने मेरा दाखिला प्राइमरी स्कूल में करवा दिया है और मैम ने स्कूल में बात करके आज्ञा ले ली है कि मैं अपने भाई को स्कूल लेकर जा सकती हूँ।

स्नेहा, उम्र 8 वर्ष, होशियारपुर

मेरा नाम विभा है मैं 8 साल की हूँ मेरे पिताजी का नाम पशेन्द्र सैनी है। मेरे पापा रिक्शा चलाते हैं मेरी माता का नाम कोचिला देवी है। मेरे पिताजी बहुत ज्यादा दारू पीते हैं। दारू पीकर मेरी मां को बहुत मारते हैं। मेरी एक छोटी बहन है और एक छोटा भाई है। मेरे पापा हम दोनों बहनों को स्कूल नहीं भेजते हैं। हमारा भी बाकी बच्चों की तरह पढ़ने को बहुत मन करता था लेकिन हमारे पापा हमें स्कूल नहीं भेजते थे एक दिन नीतू मैम हमारे घर आई थी और हमसे पूछने लगी कि बेटा आप स्कूल जाते हो। मैंने कहा मैम मन तो बहुत करता है लेकिन हमारे पापा हमें स्कूल नहीं भेजते हैं। आप कौन हो और मुझसे ये सब क्यूं पूछ रहे हो तभी नीतू मैम ने हमें उगता सूरज सेंटर के बारे में बताया और हमारे पापा को भी बताया लेकिन वो तब भी हमें भेजने को तैयार नहीं थे फिर भी मैम ने उन्हें बहुत समझाया और बड़ी मुश्किल से हमें भेजने को तैयार किया। इसके बाद हम उगता सूरज सेंटर पर पढ़ाई करने जाने लगे। हमें वहां जाना बहुत अच्छा लगता है अब नीतू मैम ने हमारा दाखिला सरकारी स्कूल में पहली कक्षा में करवा दिया है। अब हम भी बाकी बच्चों की तरह स्कूल आते हैं। हमें भी अच्छा लगता है स्कूल जाना।

विभा
उम्र 8 वर्ष, होशियारपुर

केस स्टडी

मेरा नाम विशाल है। मेरे तीन भाई हैं। मेरे पापा रिक्शा चलाते हैं। मम्मी घर पर रहती हैं। मैं दुकान पर काम करता था। एक दिन मैं बबीता मैम से मिला। मैम ने पूछा तुम पढ़ते क्यों नहीं। तो मैंने मैम को बताया कि मेरा मन पढ़ने को करता है इसलिए मुझे काम करना अच्छा नहीं लगता है। पूजा मैम मेरे घर गई, पापा मम्मी से बातचीत की, मुझे पढ़ाई के बारे में बताया तो मैं उगता सूरज सेंटर में आने लगा और अपने भाई को भी लाता था। अब मेरी मम्मी काम पर चली जाती है और हम स्कूल में जाते हैं मैम ने सरकारी स्कूल में नाम लिखवा दिया है। मैं बड़ा होकर पेन्टर बनना चाहता हूँ। मुझे पढ़ना पसन्द नहीं है पर खेलना पसन्द है।

विशाल
नगला सेंटर

मेरा नाम पूजा है। मैं 14 साल की हूँ। मेरी छः बहन और भाई है। मेरे पिताजी बिसातखाने का काम करते हैं। हमारे घर की स्थिति ठीक नहीं है। बड़ी मुश्किल से खर्चा चलता है। इसलिए मेरी मम्मी और मैं बेलदारी करते हैं। एक दिन बबीता मैम और पूजा मैम मेरे पास आई और पूछने लगी कि तुम क्यों नहीं पढ़ते। मैंने अपने घर के बारे में बताया। फिर हमारी मम्मी पापा से बात की तो पापा मान गए और मैं उगता सूरज सेंटर आने लगी। 1 साल पढ़ाई करने के बाद मैम ने मेरा एडमिशन 6 कक्षा सरकारी स्कूल में करा दिया। अब मैं रोज स्कूल जाती हूं मेरे भाई व बहन सेंटर में आते और तीन भाई बहन का स्कूल में मैम ने नाम लिखवा दिए हैं। मैं पढ़ के अपने माता पिता की मदद करना चाहती हूँ। मुझे पढ़ना बहुत अच्छा लगता है।

पूजा, नगला सेंटर

राधिका
कक्षा 6
उम्र 11 वर्ष
होशियारपुर
ज्ञान भारती
पब्लिक स्कूल

सुन्दर हरियाली
आयी मनभायी हरियाली
आयी मनभायी हरियाली।
सुबह-सुबह सूरज की किरणे
हमें नींद से जगाती है।
सूर्य की लाल लाल लाली
हमारे मनको भाती है।
तितली पीले नीले पंखों वाली।
आयी मन भायी हरियाली
आयी मन भायी हरियाली
Name
Surbhi
Sharma

उगता सूरज
NAME → MANJU NAGLA
ठंडा पानी अहा उंहु
सूर्य का उदय हुआ
कमल स्वयं खिल आ
कुकड़ू कूं की बाग दे
मुर्गा जग जगा रहा,
चिड़िया भी नीड में
कर रही चीं चीं चूं चूं
ठंड में नहाओगे ?
क्या कहा ? अहा उंहू।

दिशाएँ
आओ तुम्हें बताएँ,
होती हैं कुल चार दिशाएँ
जिधर से निकले सूरज
उसको लो तुम पूरब मान।
पूरब ओर करो मुँह,
दिशा ज्ञान की विधि आसान
पश्चिम पीठ पीछे जानो।
दाएँ हाथ दक्षिण तुम जानो,
बाएँ हाथ को उत्तर मानो।
नविता

तारे

माँ, जब सूरज ढल जाता है।
अँधियारा छा जाता है।
आसमान में जगमग, जगमग
दीये कौन जलाता है?

रात बीतने पर सपनों की
जो सूरज चमकाता है,
जो सोने- चाँदी की किरणों
धरती पर फैलाता है।

वह जब सूरज ढल जाता है।
अँधियारा छा जाता है,
आसमान में जगमग, जगमग
लाखों दीप जलाता है।

होशीयारपुर
सैंटर
Class – 3

बेटा और बेटी

Nagla Center

अगर बेटा वारिस है तो बेटी पारस है।
अगर बेटा वंश है तो बेटी अंश है।
अगर बेटा आन है तो बेटी शान है।
अगर बेटा संस्कार है तो बेटी संस्कृति है।
अगर बेटा दवा है तो बेटी दुआ है।
अगर बेटा भाग्य है तो बेटी विधाता है।
अगर बेटा शब्द है तो बेटी अर्थ है।
अगर बेटा गीत है तो बेटी संगीत है।
जब इतनी कीमती है बेटियाँ तो फिर
क्यों खटकती है मन को बेटियाँ।
जब सबको पता है बेटों को भी जन्म
देती है बेटियाँ। तो क्यों करते है
बेटे और बेटी मे भेद भाव!

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

हमारे भारत मे आज भी बेटीओ को बोझ समझा जाता है। इसीलिए चाहते है कि बेटी तो धरती पर बोझ है। और उन्हे जन्म देने से पहले मार देते है। लेकिन वह यह नही सोचते है कि बेटो से ज्यादा बेटी ही उनके काम आती है। बेटी से अपने माता-पिता का दुःख नही देखा जाता है। फिर भी वह यह सब देखते हुए बेटीओं को जन्म देने से पहले ही क्यू मार देते है। बेटी न होगी तो भाईकेराखी कौन बांधेगी। और बेटी न होगी तो बहु कहा से लाओगें। इसलिए कहते है। बेटी ही बहन बेटी दुल्हन और बेटी से ही होता है परिवार इसलिए बेटीओ को नही मारना चाहिए।

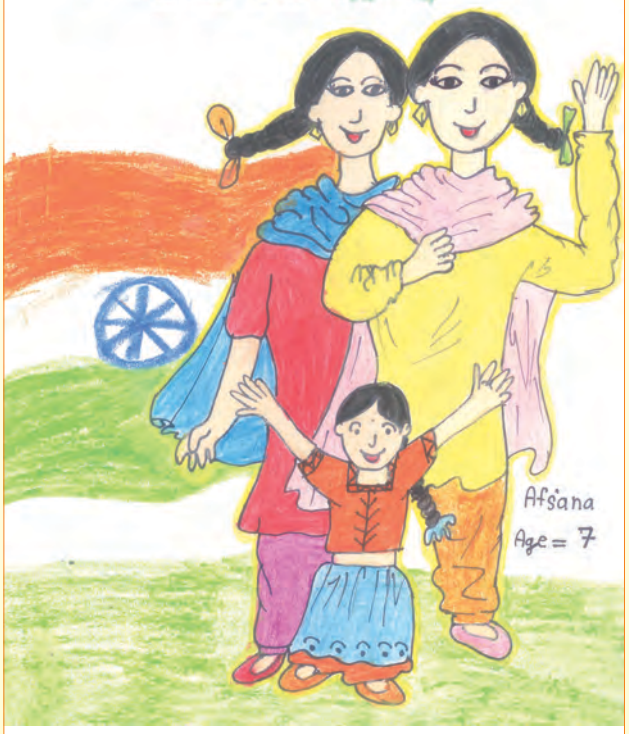

POOJA RATHOR दीदी, नगला सेंटर

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
यह अधिकार हमारा है।
बाहर निकलकर भी तो देखो
जन-जन का यह नारा है।
उगता सूरज है एक सेंटर
उसमें है जाते सब बच्चे
जात-पात का भेदभाव नहीं है।
यही हमें है सीख मिला
गरीब-अमीर का व्यवहार नहीं है।
यही हमें है ज्ञान मिला
आओ बच्चे एक टोली बनाए
एक दूजे का साथ निभाएँ
आओ अब शिक्षा अपनाएँ
कौन कहता है अमीर है पढ़ते
ये झूठ हमने देखा है हमें
फ्री में मिलती है शिक्षा हमें
बेटी को भी आगे बढ़ाना है
काम धाम भी है जरूरी पर
पढ़ाई कहीं उससे है
ज्यादा जरूरी।
बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ
यह अधिकार हमारा है।

पूजा सिंह, दीदी, नवादा सेंटर

नदी किनारे टोकरा था
उसमें बॉबी बैठा था
बैठे-बैठे भूख लगी
एक नारंगी तोड़ ली
माली के बेटे ने देख लिया
फूलझड़ी से मार दिया
बॉबी कहता मम्मी-मम्मी
मम्मी कहती हां बई हां
चोरी करना पाप है
उसके घर में सांप है
तुम हो मेरे गोपाल कन्हैया
नटखट काम है तुमको भाता
अच्छे बच्चे बनो बॉबी
यहां है स्कूल तुम्हारा
उगता सूरज नाम है।
वहां तुम्हें है सब कुछ मिलता
सारे बच्चे खुशी से जाते
चलो तुम भी नटखट बॉबी
नाम लिखा आऊं तुम्हारा।

रिंकल, दीदी, नवादा सेंटर

मेरा नाम नीतू है। मैं सदरग एन.जी.ओ. में पिछले 2 साल से उगता सूरज प्रोग्राम में फैसिलिटेटर का काम कर रही हूँ। मुझे इस प्रोग्राम से जुड़कर बहुत अच्छा लगा है। हम अपने कार्य से सभी को यह प्रेरणा देना चाहते हैं कि सभी लोग जो हमारे आसपास हैं वो हमारे साथ मिलकर काम करें। हम लोग बच्चों के लिए काम करते हैं। बच्चों के साथ खेलना, उन्हें पढ़ाना मुझे बहुत अच्छा लगता है। इस संस्था से जुड़कर हमें कुछ अच्छा करने का मौका मिला है। हम लोग आर्थिक रूप से तो किसी की सेवा कर नहीं सकते लेकिन इस प्रोग्राम के जरिए हम शारीरिक एवं मानसिक रूप से इन बच्चों के लिए कुछ कर सकते हैं जिससे मुझे बहुत खुशी मिलती है। हमारा उद्देश्य सिर्फ इतना है कि देश का हर बच्चा पढ़ने जाए जिससे एक सम्पन्न देश का निर्माण हो।

नीतू, दीदी, होशियारपुर सेंटर

आओ मिलकर एक देश बनाए,
जिसका हर बच्चा पढ़ने जाए।
हम और आप जब एक होंगे,
घर-घर जाकर बात करेंगे।
हर बच्चा जब पढ़ने जाएगा,
सोचो क्या-क्या बदलाव लाएगा।
कोई न होगा अनपढ़ वहां,
उगता सूरज होगा जहां।

लोगों का हम मन बदलेंगे,
कुछ तो परिणाम आएगा।
देश का हर बच्चा पढ़ने जाएगा,
तभी तो सभ्य देश बन पाएगा।
हम सबका है एक उद्देश्य,
मिलकर करे श्री गणेश
पढ़ा लिखा हो हमारा देश।

नीतू, होशियारपुर

मैं सन्तोष शर्मा 2012 से उगता सूरज प्रोग्राम से जुड़ी हूं। यहां आकर मैंने बच्चों की प्रतिभाओं को समझकर उन्हें सबके सामने लाना सीखा, क्योंकि कोई न कोई प्रतिभा हर इंसान में होती है, लेकिन अभावों के चलते वे उसका उपयोग नहीं कर पाते।

उगता सूरज सेंटर-सदरग एन.जी.ओ. संस्था के द्वारा प्रदत्त प्लेटफॉर्म से बच्चे अपने हुनर को सबके सामने लाने में दिन प्रतिदिन कामयाब हो रहे हैं, बच्चों व संस्था के अथक प्रयास के कारण आज निठारी सेंटर से बच्चों ने दिल्ली में डांस किया। सलाम नमस्ते रेडियो स्टेशन पर अनेकों बार प्रोग्राम दिए। अनेक जगह कला प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता दी- मैडल जीते।

सूरज नामक बच्चे ने 12वीं तक की शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ डांस एकेडमी तक खोल ली और इसी हुनर को अपनी जीविका बनाया। यह संस्था महिलाओं को भी ट्रेंड कर जीविका के साधन देने में प्रयासरत हैं।

संतोष शर्मा, दीदी, निठारी सेंटर

उगता सूरज मुझसे कहता

उगता सूरज मुझसे कहता,
हर बुरे वक्त का अंत होता,
फिर इंसान इतना क्यों रोता,
क्यों हर पल वह दु:खी होता,
क्यों हर दिन वह उदास रहता।

हो जाएगी सब खत्म ये दु:ख तुम्हारी,
अच्छे दिन देखता वही जो दु:ख सहता,
हर अंधेरे रात के बाद एक उजाला आता,
हर दु:ख के बाद सुख ही आता,
उगता सूरज मुझसे कहता।

देखना कहीं फिर ना खा जाओ धोखा,
फिर से आज तुमको मिला नया मौका,
इस मौके को ना खोना कभी तुम,
वक्त की कीमत पहचानो सब,
उगता सूरज मुझसे कहता।

जिन्दगी ढ़लने से पहले तुमको बहुत कुछ पाना,
अभी तो बड़ी दूर है तुमको जाना,
पर जो तेज भागे उसे ही फल पाना,
कुछ पाना है और कुछ खोना,
उगता सूरज मुझसे कहता।

रिचा राय, दीदी
होशियारपुर सेंटर

मेरा नाम बबीता है। मैं सदरग एन.जी.ओ. नगला में फैसिलिटेटर के तौर पर दो साल से काम कर रही हूँ। जब मैं यहां आई तो मुझे कुछ खास नॉलिज नहीं थी जो मुझे आज आकर मिली मुझे कुछ खास नहीं आता था मुझे बहुत डर लगता था मगर जब मीटिंग पर जाती थी तो मुझे ये लगता था मैं कैसे जाऊँगी मुझे कुछ नहीं पता पूछ-पूछ कर जाती मगर पहुँच जाती थी। यहाँ बच्चों के साथ-साथ मैंने अपने बेटे को भी बड़ा किया और मुझे भी पढ़ने की अच्छा जागी आज मेरा मन भी पढ़ने का करता। एक मीटिंग में वाणी मैम ने बताया कि पढ़ने की कोई उम्र नहीं होती उन्होंने अपने बारे में बताया। मुझे अहसास हुआ और मैं इस साल अपना इन्टर का फॉर्म भरकर आई। बच्चों से मुझे बहुत प्यार है।

धन्यवाद

बबीता, दीदी, तुगलपुर

मेरा नाम मनीषा है। मैं मैनपुरी की रहने वाली हूँ। मैं अभी तुगलपुर में रहती हूँ। मैं पिछले साल से उगता सूरज प्रोग्राम में काम करती हूं मुझे इसमें काम करना बहुत अच्छा लगता है। हमारी भी कई कमियां दूर हो गई है। जैसे कि मैं पहले बात करने में बहुत झिझकती थी और अब हर किसी से मैं बिना झिझक बात कर सकती हूँ। और मैं किसी के बारे में कभी बात नहीं करती थी अब मैं बच्चों के घर जाकर उनके माता-पिता से भी अपने इस उगता सूरज के बारे में पूरी जानकारी देकर उनके बच्चों को उगता सूरज से जोड़ती हूँ। उन बच्चों का कबाड़ा बीनना बन्द करवाती हूँ। और वो बच्चे भी अब मन लगाकर पढ़ना चाहते हैं। मुझे सबसे बड़ी खुशी इस बात की है कि जो बच्चे ना कुछ करते थे और ना ही आगे बढ़ते थे, अब वो बच्चे सब कुछ कर सकते हैं और वह हर जगह घूमने जाते हैं और आगे पढ़ना चाहते हैं। उगता सूरज में आकर वे आगे अपने दिल का अरमान पूरा कर सकते हैं।

मनीषा, दीदी, तुगलपुर

मैं संजू झा अप्रैल 1995 में बिहार से नौयडा आई थी। मेरी 2 लड़की और 1 लड़का है। सभी बच्चों ने यहीं शिक्षा प्राप्त की है। जब मैं गांव से निठारी आई थी तब मुझे अजीब लगता था क्योंकि यहाँ का वातावरण और गांव के वातावरण में बहुत अंतर था। उसके बाद बच्चे स्कूल जाने लगे तो मैं भी निठारी में एक प्राइवेट स्कूल में काम करने लगी। वहाँ लगभग 5 साल काम किया। उसके बाद मैं 2007 में सदरग एन.जी.ओ. में काम करने लगी। मुझे बहुत अच्छा लगा लेकिन डर लगता था कहीं सेंटर से दूर जाने में, वहां कैसे क्या बोलूंगी ये समझ में नहीं आता था। मेरे पैरों से पसीना निकलता रहता था। लेकिन माला मैम मुझे बहुत सपोर्ट करती थी। आज मैं कहीं भी जाती हूँ दिन हो या रात मुझे कहीं भी डर नहीं लगता। यहाँ बच्चे को फ्री में कॉपी, पेन्सिल, रबर देती थी और पढ़ाती भी फ्री में थी। मुझे और अच्छा लगा क्योंकि मैं स्कूल में देखती थी कि फीस, कॉपी, किताब के न होने की वजह से बच्चों को स्कूल से निकाल दिया जाता था। जिसको मुझे देखकर बहुत दु:ख होता था। और इनके हक में कुछ करने को मन करता था। फिर सदरग ने मुझे ये अवसर दिया जहां मैं इन बच्चों के कुछ कर सकूँ। मैंने बच्चों को यहाँ उगता सूरज सेंटर में पढ़ाना शुरू किया। एक साल पढ़ाने के बाद इन्हीं बच्चों का स्कूलों में एडमिशन करवाया। आज वे बच्चे 10वीं, 11वीं कर रहे हैं। मुझे बहुत अच्छा लगता है। जब ये बच्चे 70-80 प्रतिशत से पास होकर अपना व अपने माता-पिता का नाम रोशन करते हैं। हमारे सदरग में सार्थक चलता है। जिसमें कितनी ही महिलाओं ने सिलाई सीखकर दुकान खोल ली। घर में कपड़े सिलकर अपने घर में हाथ बटाने लगी। सार्थक में शीला थी। पहले मैंने उसे उगता सूरज सेंटर पर पढ़ाया फिर उसके बाद सिलाई सीखी। आज वह लड़की 10वीं पास, 64 प्रतिशत से की है। शीला का मैंने सरकारी स्कूल में एडमिशन करवाया था। 8वीं करने के बाद उसकी माता ने पढ़ाई बन्द करवा दी। वह सिलाई सीखकर प्राइवेट स्कूल में पढ़ी। फिर 9वीं में नाम लिखाकर 10वीं पास की। इसके लिए मैं माला मैम की शुक्र गुजार हूँ। मैं माला मैम की जिन्दगी भर आभारी रहूँगी।

संजू, दीदी, निठारी

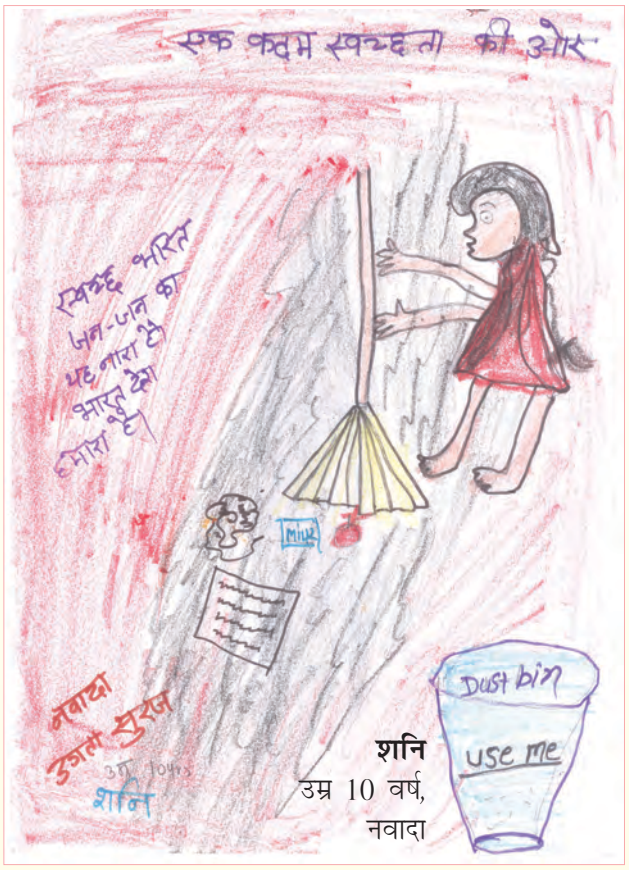

शनि
उम्र 10 वर्ष,
नवादा

दीपाक्षी शर्मा, कक्षा 4-बी, होशियारपुर

राधिका, उम्र 11 वर्ष
ज्ञान भारती पब्लिक स्कूल,
होशियारपुर

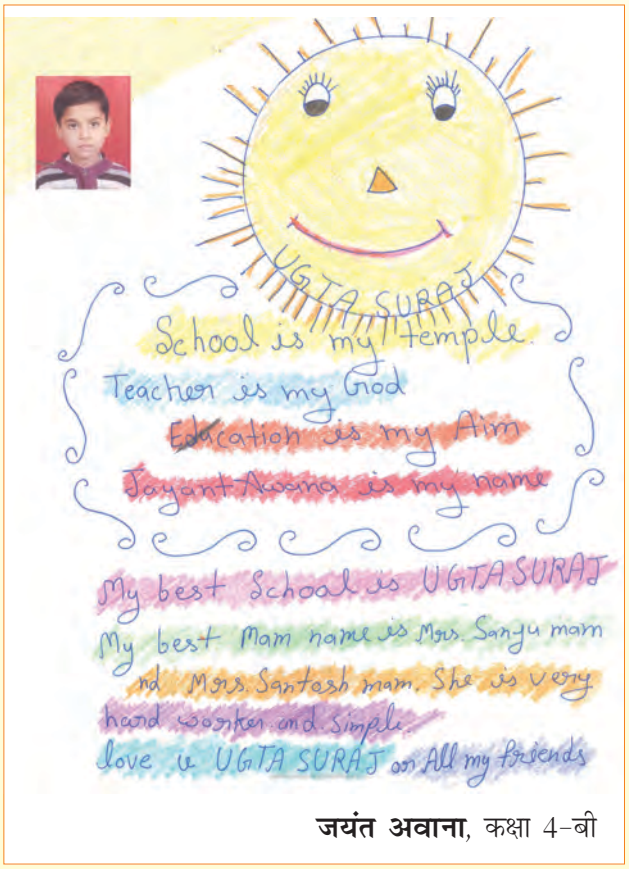

जयंत अवाना, कक्षा 4-बी

जेनेफ
कक्षा 6
निठारी सेक्टर 31
नौयडा पब्लिक स्कूल

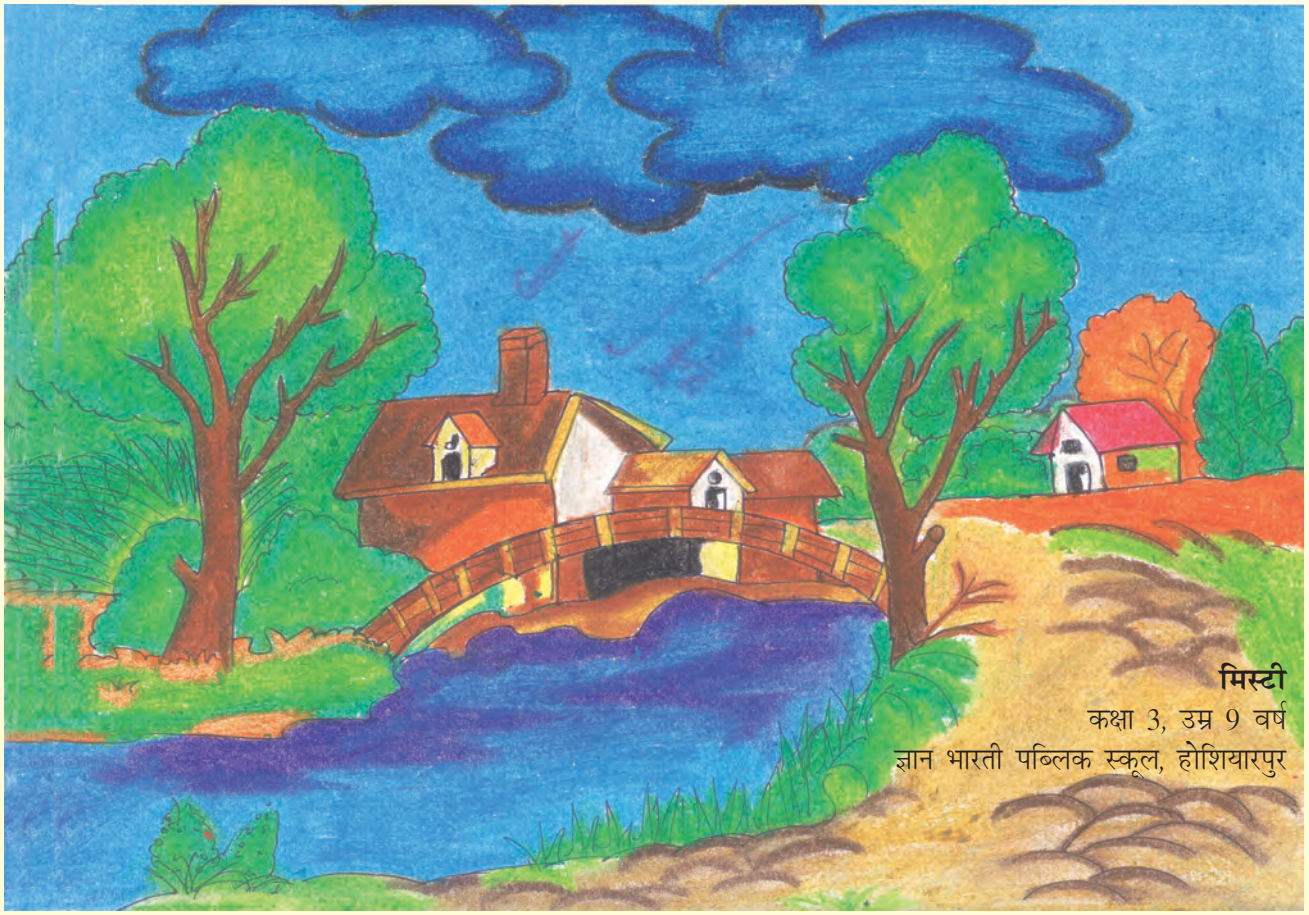

मिस्टी
कक्षा 3, उम्र 9 वर्ष
ज्ञान भारती पब्लिक स्कूल, होशियारपुर

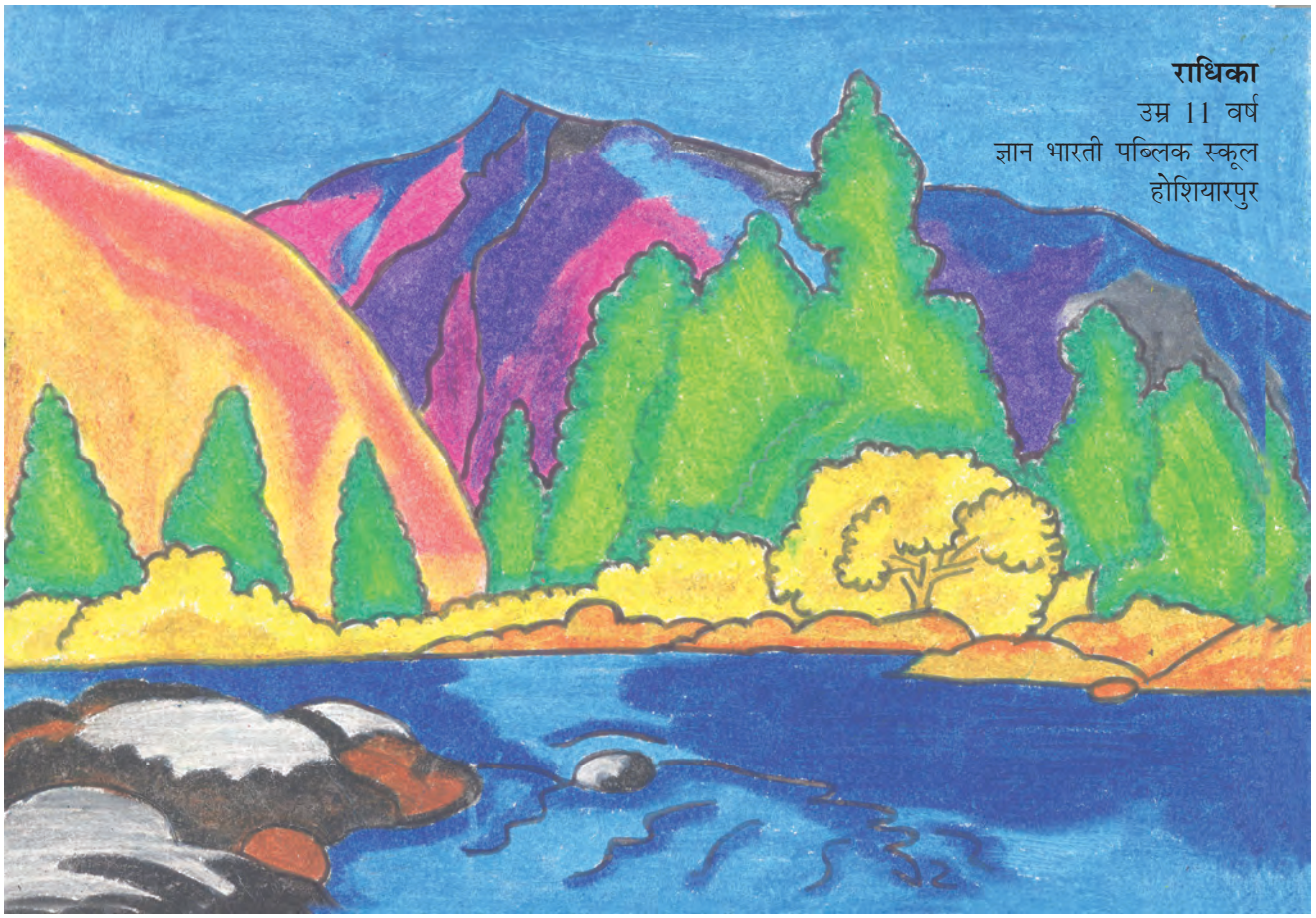

राधिका
उम्र 11 वर्ष
ज्ञान भारती पब्लिक स्कूल
होशियारपुर

वृत्त में सूरजमुखी के पुष्प का कलियों, पत्तियों व मोर के संयोजन से बना सुंदर आलेखन

मेरा नाम काजल है। मैं नगला सेंटर में पढ़ती थी। अब मैम ने 6 कक्षा में मेरा नाम सरकारी स्कूल में लिखवा दिया है। मेरी मम्मी गांव में रहती है। मैं अपने भाई को भी संभालती हूँ अब मैं स्कूल जाने लगी हूं भाई सेंटर में आता है। मुझे पढ़ना अच्छा लगता है। मैं बड़ी होकर गरीब बच्चों मतलब अपने जैसे बच्चों की मदद करना चाहती हूं। धन्यवाद मैम आपने मुझे आगे बढ़ना सिखाया। कोशिश करने वालें की कभी भी हार नहीं होती जब नन्हीं चींटी दाना लेकर पहाड़ पर चढ़ती है तो सौ बार गिरती है गिर-गिरकर भी उसकी मेहनत बेकार नहीं होती। कोशिश करने वाले की कभी भी हार नहीं होती।

काजल कुमारी
उम्र 14 वर्ष, नगला

सुफिया
उम्र 12 वर्ष

रौनक
उम्र 11 वर्ष

रीता प्रभा तिम्मा
उम्र 13 वर्ष

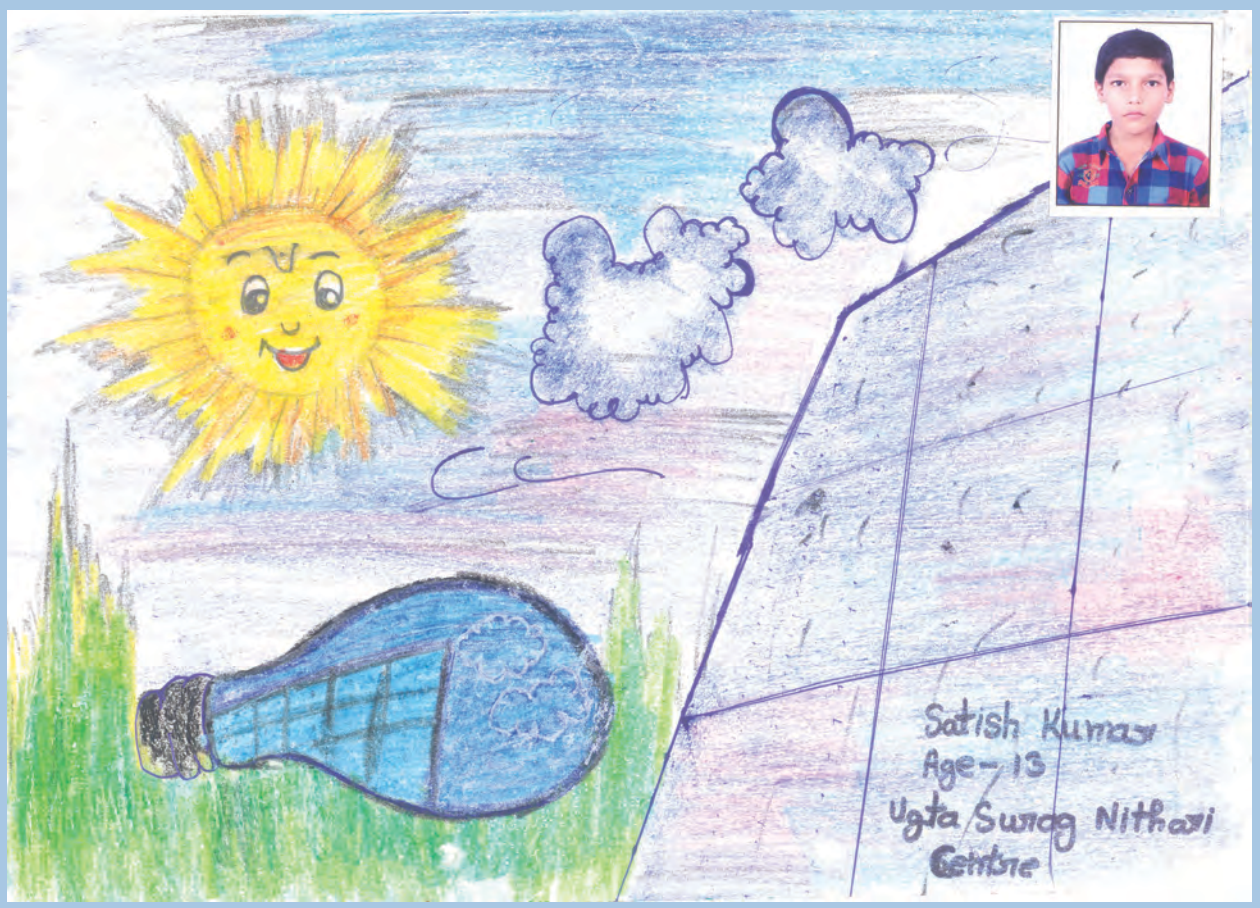

छोटा परिवार सुखी परिवार

मेरा नाम छाया है। मैं पिछले साल उगता सेंटर में पढ़ती थी फिर मैम ने मुझे 5वीं कक्षा में सराकरी स्कूल में भर्ती करवाया। मुझे और मेरे परिवार को बहुत अच्छा लगता है। मैं बड़ी होकर ब्यूटिशन बनना चाहती हूं। मगर मुझे डांस करना भी बहुत अच्छा लगता है। पढ़ना भी अच्छा लगता है।

छाया
उम्र 10 वर्ष
नगला सेंटर

आज का पर्यावरण

आज का पर्यावरण कुछ इस तरह हो रहा है अगर पृथ्वी पर पेड़ नहीं बचेंगे तो क्या होगा? तो इंसान का जीवन में बड़ी परेशानी होने लगेगी। जैसे इंसान दिन व दि मरने लगेंगे, क्योंकि ऑक्सीजन पृथ्वी पर कम होने की वजह से व्यक्ति दिन व दिन बीमारी के शिकार हो रहे हैं। अगर हम सब पेड़ नहीं काटे तो कुछ इस तरह हो जाएगा । नीचे देखें

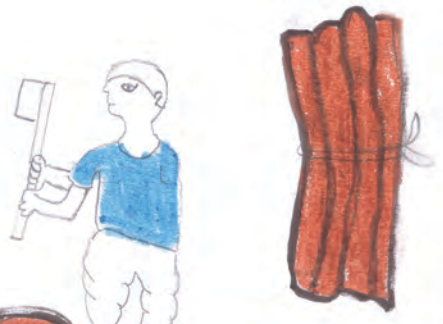

अगर हम वृक्ष नहीं काटे तो कोई भी व्यक्ति ऑक्सीजन की कमी से नहीं मरेगा।

अंजलि
नगला सेंटर

सेवा में,
श्रीमान सदरग एन.जी.ओ.
नवादा सेंटर

महोदय,

हमारी ग्राम पंचायत के नवादा ग्राम में जो आपकी संस्था द्वारा उगता सूरज कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसमें आप गरीब बच्चों को नि:शुल्क शिक्षा प्रदान कर रहे हो और वह कामयाब हो रही है। हम ग्रामवासी और मैं इससे बहुत सहमत हैं। इससे गांव में सभी शिक्षा के प्रति जागरूक हुए हैं आशा करते हैं कि आपकी इस संस्था द्वारा हमारे गांव में ज्यादा से ज्यादा बच्चों और उनके माता-पिता जागरूक हों। हम ग्रामवासी आपकी इस संस्था का सदैव आभारी रहेंगे।

धन्यवाद

श्रीमती रेनू, प्रधान
ग्राम प्रधान - नवादा
ग्रेटर नौयडा

Some text come here

Group pic. come here

SADRAG

Social
And
Development
Research &
Action
Group

Social and Development Research
and Action Group IETE Noida Basement
PS-1D, Behind Brahamputra Shopping Complex
Sector-29, Arun Vihar, Noida-201303
Ph.: 9313678373 / 0120-3264313
E-mail: mail@sadrag.org • Url: www.sadrag.org

GALAXY • 98105 73082